REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 9 | JUNE - 2021

पन्ना जिले (मध्य प्रदेश) के नवीन अन्वेषित शैलाश्रयों मगरकच्छ और अमरकंठ के शैलचित्रों का सांस्कृतिक अध्ययन

सौरभ कुमार तिवारी
शोध छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति और पुरातत्व विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश

शोध सार

शैलचित्र मानव इतिहास के महत्वपूर्ण साधन हैं। पर्वतों की गुफाओं, कन्दराओं, शैलाश्रयों मे बने चित्र इतिहास की ऐसी चित्रमयी पुस्तक हैं, जिनका अध्ययन करने के लिए किसी भाषा के ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। मध्य प्रदेश के पन्ना जिले मे विंध्याचल पर्वतमाला मे अनेक चित्रित शैलाश्रय उपलब्ध हैं, जिनमे निवास करने वाले मानवों के अवशेष उसके द्वारा इन शैलाश्रयों की दीवारों पर बनाए गए शैलचित्रों के रूप मे प्राप्त होते हैं। यदि सावधानी पूर्वक निरीक्षण किया जाए तो यह चित्र इनमे निवास करने वाले लोगों के जीवन, विचारों, रीत-रिवाजों, धार्मिक मान्यताओं,और तत्कालीन पर्यावरण के सबंध मे व्यापक सूचनाएं उपलब्ध कराते हैं। मानव सभ्यता के विकास का क्रमिक विवरण भी इनमे उपलब्ध है। मध्य प्रदेश के पन्ना जिले के नवीन अन्वेषित चित्रित शैलआश्रय- मगरकच्छ और अमरकंठ के शैलचित्र इनमे निवास करने वाले तत्कालीन मानवीय सभ्यता-संस्कृति का व्यापक ज्ञान प्रदान करते हैं। इनमे उपलब्ध शैलचित्रों को मध्य पाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के कालानुक्रम मे रखा जा सकता है।

पन्ना जिले (मध्य प्रदेश) के नवीन अन्वेषित शैलाश्रयों मगरकच्छ और अमरकंठ के शैलचित्रों का सांस्कृतिक अध्ययन -

पन्ना जिला भारत के हृदयस्थल मे स्थित मध्य प्रदेश के उत्तरपूर्व मे स्थित है, सांस्कृतिक रूप से यह बुंदेलखंड का भाग है। जनपद का भौगोलिक विस्तार 23 °45' से 25 °10' उत्तरी अक्षांश तक तथा 79 °15' पूर्वी देशान्तर से 80 °40' पूर्वी देशान्तर तक है। जनपद का क्षेत्रफल 7135 [2] किलो मीटर है [1]। पन्ना के नामकरण के संबंध मे अनेक मत प्रचलित हैं, जिसमे सर्वाधिक मान्य मत जिला मुख्यालय मे स्थित माँ पद्मावती के मंदिर के आधार पर व्युत्पत्ति से संबंधित है जिसके अनुसार पद्मावती पूरी से परना तथा बाद के काल मे पन्ना कहा जाने लगा [2]। पन्ना जिले का अधिकांश भूभाग पठारी और पहाड़ी है जिसमे विंध्याचल पर्वत श्रेणियाँ का विस्तार है। इन्हे स्थानीय स्तर पर पन्ना श्रेणियों के नाम से जाना जाता है। इसके दक्षिणी पूर्वी भाग को काल्दा पठार कहते हैं जिसकी सबसे ऊंची चोटी श्यामगिरी है। पन्ना जिले मे ही पन्ना टाइगर रिजर्व स्थित है। जिले की प्रमुख नदी केन है अन्य नदियां बाघिन, किलकिला आदि हैं। पन्ना जिले की विशिष्ट भौगोलिक दशाओं जो प्रागैतिहासिक मानव के निवास के लिए उपयुक्त थीं के कारण यहाँ की नदी घाटियों मे स्थित शैलाश्रयों और कन्दराओं मे मानव निवास करता था, जिसके प्रमाण यहाँ प्राप्त होने वाले अवशेष हैं जो पाषाण उपकरणों, शैलचित्रों के रूप मे विभिन्न सर्वेक्षणों के दौरान प्राप्त हुए हैं। [3] शैलचित्र प्रागैतिहासिक मानव के विषय मे ज्ञान प्राप्त करने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन हैं क्योंकि दूसरे पुरावशेषों से प्राप्त सूचनाएं अप्रत्यक्ष होती हैं जबकि शैल चित्र प्रत्यक्ष रूप से हमे उसके निर्माणकर्ता की सभ्यता-संस्कृति की सूचनाए प्रदान करते हैं। पन्ना जिले के अनेक स्थानों से प्रागैतिहासिक मानव के द्वारा बनाए गए शैल चित्र प्राप्त होते हैं। [4] इन शैल चित्रों का प्रमुख वर्ण्य विषय शिकार, भोजन सामग्री का संग्रहण, युद्ध, मनोरंजन, ज्यामितीय आकृतियाँ तथा धार्मिक दृश्य है।

पन्ना जिले मे पूर्व मे हुए सर्वेक्षणों में प्रकाश मे आए प्रमुख चित्रित शैलाश्रय हैं- बृहस्पतिकुंड, चरधोबा(जरधोबा), बरछ पंडवन, लाल पुतरिया, माझा पहाड़, टपकानिया, हाथीडोल, पुतरयाऊ घाटी आदि। 2018 मे बृहस्पतिकुंड के समीप ही मगरकच्छ नामक चित्रित शैलाश्रय की खोज और उनका दस्तावेजीकरण राजेन्द्र देहुरी और अरखित प्रधान के द्वारा किया गया.[5] अपने शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण के दौरान लेखक के द्वारा एक नए शैलाश्रय जिसको स्थानीय लोगों के द्वारा अमरकंठ के नाम से जाना जाता है की खोज और सर्वेक्षण का कार्य किया गया। मगरकच्छ और अमरकंठ के शैलाश्रयों के शैलचित्रों का सांस्कृतिक दृष्टि से विश्लेषण इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

मगरकच्छ- पन्ना जिला मुख्यालय से पहारीखेड़ा मार्ग पर 30 किलो मीटर की दूरी पर बृहस्पतिकुंड का प्रसिद्ध स्थल है यहाँ पर एक प्रसिद्ध जल प्रपात और एक कुंड जिसे महान ऋषि बृहस्पति के आश्रम के वहाँ स्थित होने की कथा के आधार पर बृहस्पतिकुंड के नाम से जाना जाता है(चित्र सं०१)। यहाँ के शैलचित्रों के संबंध मे सर्वप्रथम 1961-62 में सूचनाएं प्रकाशित हुई थीं।[6] बृहस्पतिकुंड शैलाश्रय से नीचे घाटी मे स्थित बृहस्पतिकुंड से पश्चिम दिशा मे बाघिन नदी के बाएं किनारे पर 1.5 किलोमीटर की दूरी पर मगरकच्छ शैलाश्रय स्थित है(चित्र सं०२)। राजेन्द्र देहूरी जी द्वारा यहाँ तीन शैलाश्रयों के बारे मे बताया गया गया है और उन्हे मगरकच्छ-1, 2, 3 के रूप मे वर्णित किया गया है,परंतु मगरकच्छ 1 और 2 एक ही शैलाश्रय के रूप मे देखे जा सकते हैं, क्योंकि चित्र लगभग 150 मीटर की लंबाई मे लगातार बने हुए हैं। इसी के समीप नदी के द्वारा एक और सुंदर झरने का निर्माण किया जाता जाता है। मगरकच्छ के चित्रों के संबंध मे एक विशेष बात यह है कि कुछ चित्र नदी तल से बिल्कुल ही निम्न ऊंचाई पर बने हुए हैं जो की असामान्य लक्षण है। कुछ चित्रों को केवल लेटकर या बैठकर ही देखा जा सकता है। नदी तल से निम्न ऊंचाई पर स्थित होने के कारण ही संभवतः जलके अत्यधिक संपर्क मे आने के कारण चित्रों का और साथ मे उन्हे धारण करने वाली चट्टानों का क्षरण भी हुआ है। अधिकांश चित्रों पर पेटिना का कम या अधिक मात्रा मे जमाव है। कुछ चित्रों पर एन्क्रस्टेशन के भी प्रमाण प्राप्त होते हैं।

मगरकच्छ के शैलचित्रों का प्रमुख वर्ण्य विषय शिकार के दृश्य, पशुओं के स्वतंत्र चित्रण, युद्ध दृश्य तथा मानवीय क्रिया कलाप हैं। इन चित्रों के निर्माण का काल मध्य पाषाण काल से लेकर लेकर ऐतिहासिक काल तक रखा जा सकता है।[7] सर्वाधिक प्राचीन चित्र पेटिना के नीचे दबे हुए हैं तथा बहुत ही सावधानीपूर्वक अवलोकन पर ही दृष्टिगत होते हैं। अधिकांश चित्रों का निर्माण लाल, गेरुए, तथा कत्थई रंग से किया गया है, लाल रंग से निर्मित चित्रों की संख्या सर्वाधिक है।

पशुओं के चित्रों का निर्माण सर्वाधिक संख्या मे किया गया है, पशु जंगली तथा पालतू दोनों प्रकार के हैं। पशुओं को चरते हुए या झुंडों मे खड़े हुए दिखाया गया है, नीलगायों के एक झुंड का एक स्थान पर आराम से खड़े हुए दृश्य का सुंदर अंकन प्राप्त होता है। यहाँ से प्राप्त जंगली पशुओं के चित्रों मे हाथी, जंगली भैंस, हिरण, बंदर, नीलगाय, चीता, बारहसिंगा, एक जिराफ़ जैसा जानवर तथा कुछ अज्ञात या ऐसे पशुओं के चित्र भी प्राप्त हुए हैं जिनकी पहचान वर्तमान मे संभव नहीं है। यहाँ चित्रित पशुओं मे से अधिकांश अभी भी इस क्षेत्र में प्राप्त होते हैं। एक चित्र मे एक गर्भवती हिरण को उसके पेट मे बच्चे के साथ चित्रित किया गया है(चित्र सं०३)। अन्यत्र एक चित्र मे चीता और उसकी पीठ पर सवार बंदर को चित्रित किया गया है(चित्र सं०४)। इसी चित्र के ऊपर एक वृहद आकार के हाथी का चित्रण किया गया है। लकड़बग्घे का एक अधूरा चित्र भी प्राप्त हुआ है जिसकी पहचान उसके फैले हुए मुंह मे दिख रहे दांतों से होती है। रेखांकन शैली मे हिरण का एक अत्यधिक सुंदर चित्र भी यहाँ से प्राप्त होता है। पालतू पशुओं मे सर्वाधिक घोड़े का अंकन मिलता है, सर्वाधिक आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि जहां इससे थोड़ी ही दूर स्थित बृहस्पतिकुंड के चित्रों मे घरेलू मवेशियों जैस गाय, बैल, तथा कृषि से संबंधित चित्र प्राप्त हुए हैं वहीं यहाँ से ऐसा कोई भी चित्र प्राप्त नहीं हुआ है। चिड़ियों के तथा जलीय जीवों के चित्र भी यहाँ से प्राप्त नहीं हुए हैं। एक स्थान पर सर्प और एक चित्र कनखजूरे का भी प्राप्त हुआ है(चित्र सं०५)। पशुओं के शरीर को आड़ी तिरछी रेखाओं तथा ज्यामितीय अलंकारणों द्वारा भरा गया है।

मानवीय जीवन संबंधित अधिकांश चित्र शिकार के दृश्यों से संबंधित हैं जिसमे मनुष्यों को अकेले अथवा सामूहिक रूप से शिकार करते हुए दिखाया गया है। शिकार करने के लिए प्रमुख रूप से धनुष-बाण का प्रयोग करते हुए दिखाया गया है, कुछ चित्रों मे भाले का भी प्रयोग दृष्टव्य है। शिकारसंबंधी कुछ चित्र ऐसे भी हैं जिसमे शिकारी घोड़े पर सवार है, संभवतः यह शासक वर्ग द्वारा शिकार को चित्रित करता है। एक चित्र मे एक शिकारी द्वारा पशु (संभवतः हिरण) को एक बाण मार दिया गया है तथा दूसरे बाण को धनुष पर चढ़ाए हुए दिखया गया है(चित्र सं०६)। जंगली भैंस तथा नीलगाय और हिरण के शिकार के अनेक चित्र उपलब्ध हैं।

घोड़े पर सवार सैनिकों जिन्होंने अपने हाथ मे तलवार, ढाल, भाला या छत्र ले रखा है तथा सिर पर सिरस्त्राण धारण कर रखा है बहुतायत मे उपलब्ध हैं। घुड़सवारों को अकेले या समूहों जाते हुए दिखाया गया है। घोड़ों को गतिशील

दिखने के लिए सैनिकों के बालों को घोड़े की विपरीत दिशा मे उड़ते हुए दिखाया गया है(चित्र सं०७)। कुछ चित्रों मे एक ही घोड़े पर दो या तीन सैनिकों को भी सवार दिखाया गया है। सैनिकों को पैदल जाते हुए भी दिखाया गया है, एक चित्र मे आगे-2 पैदल सैनिक तथा उनके पीछे घोड़े पर सैनिकों को जाते हुए दिखाया गया है जो सेना के प्रयाण का सूचक है। एक चित्र मे एक विशाल घोड़े पर तीन महिला आकृतियों को दिखाया गया है। घोड़े पर सवार तथा पैदल जाते हुए ग्रीक सैनिकों के चित्र भी दृष्टव्य हैं जिनकी पहचान उनके सिर पर धारण किए हुए ग्रीक टोप से हो जाती है।[8] शाही सवारी का भी चित्रण है जिसमे घोड़े पर सवार शासक बीच मे चल रहा है जिसके आगे पताकाधारी सैनिक और कुछ शस्त्र धारी सैनिक आगे पीछे चल रहे हैं(चित्र सं०८)। युद्ध के भी अनेक दृश्यों का चित्रण है। एक चित्र मे एक घुड़सवार सैनिक द्वारा एक व्यक्ति पर भाले से वर करते हुए दिखाया गया है(चित्र सं०९) ।

सामाजिक और धार्मिक जीवन से सम्बन्धित चित्र भी यहाँ प्राप्त होते हैं। एक स्थान पर कुछ लोगों को एक दूसरे का हाथ पकड़कर समूह मे नृत्य करते हुए दिखाया गया है। घोड़े या हाथी पर पर दो या तीन अथवा अधिक लोगों को सवारी करते हुए दिखाया गया है। सामूहिक रूप से शिकार करने के भी अनेक चित्र चित्र यहाँ से प्राप्त होते हैं, कुछ चित्रों मे महिलाओं को घुड़सवारी करते हुए दिखाया गया है जो तत्कालीन समाज मे महिलाओं की उच्च स्थिति का प्रतीक है।समाज के विभीन वर्गों के संबंध मे भी इन चित्रों से पर्याप्त सूचनाए मिलती हैं, पैदल शिकार करते हुए मनुष्य समाज के निम्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं वहीं घोड़े और हाथी पर सवार लोग समाज के उच्च वर्ग को दर्शाते हैं, उनमे भी ऐसे चित्र जिनमे लोगों ने सिर पर मुकुट धारण कर रखा है वो राजघरानों से संबंधित लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। तत्कालीन मानव के धार्मिक मान्यताओं का भी कुछ संकेत इन चित्रों से प्राप्त होता है। एक स्थान पर सूर्य का चित्रण भी किया गया है जिससे निकालनी वाली किरणे चारों ओर फैलती दिखाई गई हैं जो संभवतःतत्कालीन समाज मे सूर्य की उपासना के प्रचालन का संकेत देती हैं(चित्र सं०१०)१ एक स्थान पर बिल्कुल वैसा ही ज्यामितीय आरेखण किया गया है, जैसा वर्तमान समय मे पुजारियों के द्वारा पूजापाठ के समय निर्मित किया जाता है जिसे सामान्य भाषा मे चौक पूरना कहते हैं(चित्र सं०११)।[10] एक चित्र मे किसी देवता या पारलौकिक शक्ति का चित्र बनाया गया है जिसके सिर के ऊपर प्रभा मण्डल का निर्माण किया गया है तथा उसे आस-पास खड़े मानवों से वृहद आकार का दिखाया गया है(चित्र सं०१२)। युगल देवता की छवि का निर्माण भी किया गया गया है, जिसमे देवी और देवता दोनों को स्थानक अवस्था मे दिखाया गया है और उनके हाथ मे आशीर्वाद की मुद्रा मे हैं(चित्र सं०१३)। एक स्थान पर कुछ लोगों को एक पेड़ के आस पास खड़े हुए दिखाया गया है जो संभवतः वृक्ष उपासना का चित्रण है जोकि वर्तमान समय मे भी हिन्दू धर्म में प्रचलित है। हाथों की छाप का भी एक चित्र उपलब्ध है हिन्दू धर्म मे मांगलिक कार्यों में अभी भी घरों की दीवालों पर हाथों की छाप लगाने का रिवाज है। समूह में शिकार के चित्र भी संभवतः आनुष्ठानिक धारणा से जुड़े हुए हैं क्युकी वतमान मे कुछ जन जातियों मे वर्ष में एक बार विशेष दिन समूह मे शिकार की परंपरा प्रचलित है। लाल रंग से गोल बिंदुओं का निर्माण भी यहाँ किया गया है जो संबावतः किसी प्रकार के अनुष्ठान से जुड़े होंगे।

शैलाश्रयी मानव के सौन्दर्य और अलंकरण प्रियता के प्रमाण के रूप मे ऐसे भी की चित्र यहाँ सेप्राप्त हुए हैं जिनमे फूलों तथा विभिन्न ज्यामितीय रेखांकनों का निर्माण शैलश्रय की दीवारों और छत पर किया गया है। कमल के पुष्प का का सुंदर चित्र यहाँ से प्राप्त हुआ है(चित्र सं०१४)। इसके अतिरिक्त विभिन्न जंगली पुष्पों और पत्तियों के भी अंकन यहाँ से प्राप्त हुए हैं। विभिन्न पशुओं और मनुष्यों के चित्रों को ज्यामितीय अलंकरण से सजाना भी तत्कालीन मानव की सौंदर्यप्रियता का प्रमाण हैं। इनके अतिरिक्त एक दिए जैसी आकृति भी यहाँ चित्रित की गई है(चित्र सं०१५)। एक सजावटी वृक्ष का भी चित्र यहाँ से प्राप्त होता है।

शैलाश्रयी मानव के मनोरंजन के साधनों का ज्ञान भी इन चित्रों से प्राप्त होता है। सर्वप्रथम तो विद्वानों द्वारा यह संभावना जताई गई है कि शैलचित्रों का निर्माण तत्कालीन मानवों द्वारा खाली समय के सदुपयोग और मनोरंजन के लिए ही किया होगा। शिकार तो वर्तमान से कुछ समय पहले तक जब कि इस पर प्रतिबंध लगाया गया, अभिजात्य वर्ग के मनोरंजन का एक प्रमुख साधन रहा है जो कि शैल चित्रों का प्रमुख वर्ण्य विषय है।

अमरकंठ –

पन्ना से अमानगंज रोड पर बीस किलोमीटर की दूरी पर पन्ना वन्य जीव अभयारण्य के बफर जोन में ग्राम जरधोबा(चरधोबा) स्थित है। यहाँ पर पूर्व मे चित्रित शैलाश्रयों की खोज और सर्वेक्षण का कार्य हो चुका है। चरधोबा के पूर्व मे ज्ञात चित्रित शैलाश्रय से लगभग 1 किलो मीटर की दूरी पर अमरकंठ शैलाश्रय(24 °65' उ. अक्षांश और 80 °09' पूर्वी देशान्तर) पश्चिमोत्तर दिशा मे स्थित है। यहाँ पर पहुँचने का मार्ग अत्यंत ही दुर्गम है, जो कि दो चट्टानों के मध्य से होकर है,

यह रास्ता अत्यंत ही संकरा, ढलानदार तथा खतरनाक है और नीचे घाटी की ओर ले जाता है। शैलाश्रय लगभग 50 मीटर लंबा तथा 1 से 1.5 मीटर तक चौड़ा और पश्चिमाभिमुखी है, जिसमे एक किनारे पर एक छोटा सा जलस्रोत है जिसके पास एक शिवलिंग स्थापित है संभवतः इसी के नाम पर इस स्थान को अमरकंठ कहा जाता है(चित्र सं०१६)। शैलाश्रय के दूसरे छोर पर कुछ चित्र बने हैं। अधिकांश चित्र प्राकृतिक कारकों से क्षरण के कारण अत्यंत ही धूमिल और अस्पष्ट हो गए है, जिन्हे आसानी से पहचाना नहीं जा सकता है। चित्रों का निर्माण गेरुआ और कत्थई रंग से किया गया है, सबसे महत्वपूर्ण चित्र काले रंग का है जिसमे दो मानवों का चित्रण किया गया है। एक चित्र मे 15-16 मानवीय आकृतियों को एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए दिखाया गया है जो संभवतः सामूहिक नृत्य का चित्रण है(चित्र सं०१७)। इसी चित्र के नीचे एक जंगली भैंस और हिरण को खड़े हुए दिखाया गया है। संभवतः दोनों चित्र अलग अलग काल के हैं क्योंकि मनुष्यों के चित्रों मे शरीर को रंग से पूरी तरह भर गया है जबकि पशुओ के शरीर को भरने के लिए सीधी खड़ी रेखाओं से सजाया गया है। गेरुए लाल रंग से निर्मित एक चित्र मे तीन मानवों को खड़े हुए दिखाया गया है जिसके ऊपर की ओर दो नीलगायों को चित्रित किया गया है। एक अन्य स्थल पर दो हिरणों चित्रित किया गया है। चित्रों को मध्य पाषाण काल से नव पाषाण काल तक के कालानुक्रम मे रखा जा सकता है।

निष्कर्ष –

पन्ना जिले के नवीन अन्वेषित शैलाश्रय मध्य पाषाण से लेकर ऐतिहासिक काल तक के शैल चित्रों को सँजोये हुए हैं तथा अपने निर्माणकर्ताओ तथा उनके जीवन और सभ्यता संस्कृति के के संबंध मे व्यापक ज्ञान प्रदान करते हैं। अपने निर्माणकर्ताओ के आदिम जीवन के संबंध मे सूचनाए प्रदान करने के साथ साथ ये हमे तत्कालीन ग्रामीण और नगरीय जीवन के संबंध मे संबंध मे भी सूचनाएं उपलब्ध कराते हैं। ये चित्र हमे बताते हैं कि जब देश के कुछ स्थानों पर नगरीय सभ्यता का उदय हो रहा था उसी समय कुछ लोग ऐसे भी थे जो की आदिम अवस्था मे जीवन यापन कर रहे थे। तत्कालीन मानव की सभ्यता-संस्कृति, रहन-सहन, रीति-रिवाज और पहनावे का भी ज्ञान भी इन चित्रों के द्वारा होता है। तत्कालीन मानव के तकनीकी ज्ञान के संबंध मे सूचनाएं भी इन चित्रों मे मानव द्वारा धारण किए जाने वाले विभिन्न अस्त्र शस्त्रों तथा उपकरणों से प्राप्त होती हैं। इन चित्रों मे प्रयोग किए रंग जो कि हजारों वर्षों से मौसम की मार को झेलते हुए भी अभी भी बरकरार हैं इनको बनाने वाले मानव के रसायन कौशल का प्रमाण हैं। इतिहास की विभिन्न घटनाओं की पुष्टि भी इन शैलचित्रों के माध्यम से की जा सकती है। उदाहरणस्वरूप भारत मे हुए ग्रीक/ यूनानी आक्रमण के की पुष्टि शैलचित्रों से प्राप्त यूनानी सैनिकों के चित्रों से हो जाती है। यूनानी आक्रमणों के विस्तार क्षेत्र के संबंध में भी इनसे सूचनाए प्राप्त होती हैं। प्रागैतिहासिक पशु पक्षी, पेड़-पौधे तथा वातावरण के विषय मे भी ये प्रामाणिक साक्ष्य प्रदान करते हैं। पन्ना क्षेत्र मे विस्तार और योजनाबद्ध सर्वेक्षण किए जाने पर और भी चित्रित शैलाश्रय प्राप्त होने की संभावनए हैं। पन्ना टाइगर रिजर्व बन जाने से अधिकांश चित्रित शैलाश्रय इसके अंदर समाहित हो गए हैं जहां पहुँचने के लिए अनुमति लेनी पड़ती है, कुछ स्थानों पर जंगली हिंसक पशुओं का भी भय है। अतः विस्तृत सर्वेक्षण कार्य केवल सरकारी सरंक्षण में ही संभव है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. सिन्हा, ए० ऍम०, पन्ना डिस्ट्रिक्ट गज़ेटिएर, डिपार्ट्मन्ट ऑफ कल्चर, मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल, 1994
2. मिश्र, मदन मोहन, हीरों की धरती पन्ना, पृ० २-३
3. पाण्डेय, जयनारायण, पुरातत्व विमर्श, पृ० २८६
4. गुप्ता, एन० पी०, "न्यूली डिस्कवर्ड पेंटेड रॉक शेल्टर इन पन्ना डिस्ट्रिक्ट" रॉक आर्ट ऑफ इंडिया(एडि०) के० के० चक्रवर्ती, अर्नोल्ड-हेनमान पब्लिकैशन, भारत,1984, पृ०201
5. देहुरी, राजेन्द्र, आरखित प्रधान," रीविजिटिंग बृहस्पतिकुंड एण्ड डिस्कवरी ऑफ रॉक आर्ट्स इन इट्स अडजोइनिंग एरिया इन डिस्ट्रिक्ट पन्ना" icon जर्नल ऑफ आर्कीयालॉजी, वॉल्यूम ५, बी. आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, दिल्ली, २०१८, पृ० १२८
6. वाकड़कर, विष्णु श्रीधर, रॉबर्ट ब्रुक्स, स्टोन एज पेंटिंग इन इंडिया, डी. बी. तरपोरेवल एण्ड संस, बंबई, १९७६
7. इंडियन आर्कीयालॉजी ए रिव्यू, १९६१-६२, पृ० ९९
8. वाकड़कर, वी० एस०," भीमबेटका एण्ड डेटिंग ऑफ इंडियन रॉक पेंटिंग" रॉक ऑफ आर्ट इंडिया (एडि०), के० के ० चक्रवर्ती, अर्नोल्ड हेनमान पब्लिकैशन, भारत,1984

9. पाली, कृष्णेन्दु, ए० बनर्जी, अरुण मकल," रिलेशन बेटवीन रॉक आर्ट एण्ड रिचुअल प्रैक्टिस- ए केस स्टडी फ्रॉम ईस्टर्न इंडिया" आर्किलोजिकल रिसर्च इन एशिया, वॉल्यूम ३, २०१५ पृ० ३६
10. पाठक दुबे, मीनाक्षी, रॉक आर्ट ऑफ पंचमढ़ी बायोस्फियर, बी० आर० पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन नई दिल्ली, २०१३ पृ० ५
11. बेडेकर, वी० एच०," इंडियन रॉक शेल्टर पेंटिंग्स- देअर सिग्निफिकन्स" रॉक ऑफ आर्ट इंडिया (एडि०), के० के ० चक्रवर्ती, अर्नोल्ड हेनमान पब्लिकैशन, भारत,1984 पृ० १००

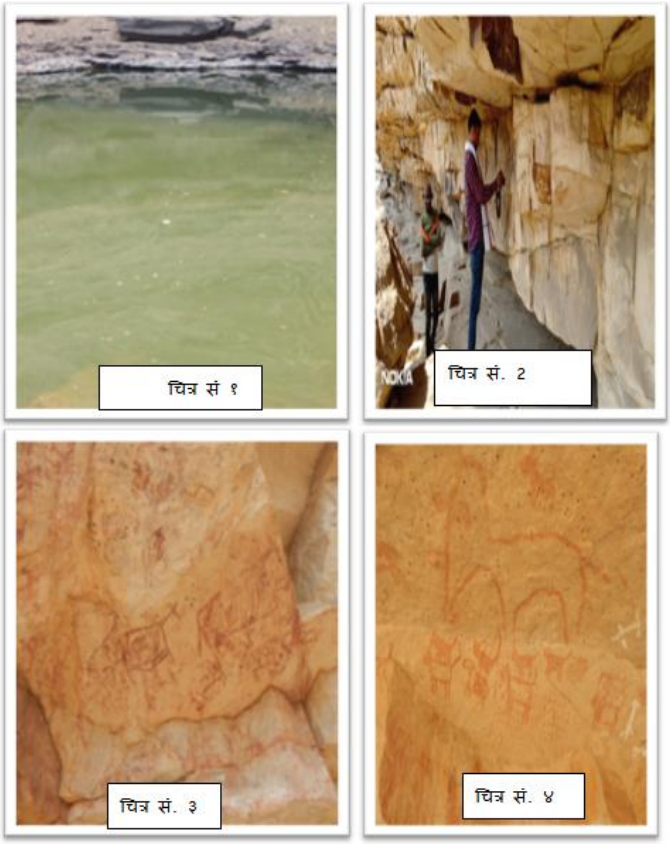

चित्र सं. 5

चित्र सं. ६

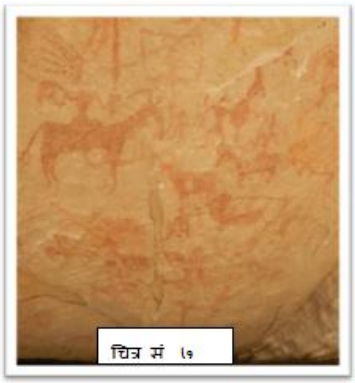
चित्र सं ७

चित्र सं ८

चित्र सं. ९

चित्र सं १०

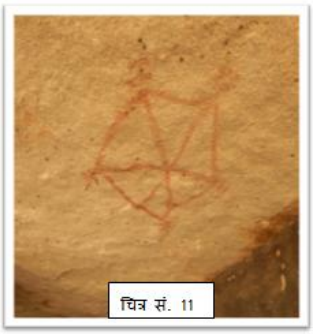
चित्र सं. 11

चित्र सं. १२

चित्र सं. १३

चित्र सं. 14

चित्र सं १५
चित्र सं १६
चित्र सं. १७
चित्र सं. १८